मैं कब तक हँस सकूँगी ..... ? : इस दुनिया में ?

"हम सब जो इस दुनिया में अपना जीवन बिताते है, इस दुनिया के वासी है, हम मनुष्य है।"

भगवान ने इनसान को बाकी प्राणियों से अलग बनाया है, हमें सोचने की शक्ति देकर, चिंताशक्ति देकर। हम दूसरे प्राणियों से खास है, चिंताशक्ति के साथ।
सिर्फ चिंताशक्ति ही हमारी खासियत नहीं है, हमारे पास कुछ और भी है, हमारे भाव। हम सबके पास है वह, हम खुश हो सकते है, दुःखी, गुस्सा और बहुत पर सिर्फ हम नहीं सारे जानवर भी हो सकते है। पर इनसानों की बात अलग है।

आप किसी व्यक्ती से भी पूछिए की सारे भावों में

सबसे श्रेष्ठ भाव कौनसा है' तो कोई भी यही कहेगा की 'खुशी' ही है। और हम हमारी खुशी को प्रकट करते है हँसी से। कोई भी व्यक्ति तब हँसता है जब वह खुश होता है मगर किसी को भी नहीं पता की उनकी खुशी कब तक रहेगी या की वे कब तक हँस सकेंगे ? और यह एक बहुत बड़ा प्रश्न है....।

हमारी कहानी : नई ज़िंदगी....

जैसे कहते है कहीं ना कहीं तो एक परी है, जो खूबसूरत है पुरी दुनिया की हँसी से ज़्यादा। यहाँ भी है एक परी, नाम है उसका 'नूर' मतलब एक तरह की प्रकाश, दूसरों से खास। आँखें ऐसी थी की जिन्हें देखकर कोई भी चाहे की इनमें डूब मरूँ, थी ही वे नीली-नीली पानी की तरह जिनमें अबतक एक छोटा सा पत्ता भी ना गिरा हो। इतना साफ़। नाक थी छोटी सी प्यारी सी जैसे खरगोश की हो। गुलाबी-गुलाब की जैसे होंठ और चमेली के फूल जैसे दाँत। गाल भी थे प्यारी-सी बच्चे जैसे वाली। पूरा चहरा

ऐसा था की जिसे देखकर चाँद भी सोचे, की हमसे खुबसूरत ऐसा कौन है धरती पर ?' सिर्फ चहरा ही नहीं, दिल भी परी जैसा था। दुःख को बाट के कम और खुशी को दुगना करती थी। एक बार जो उससे मिले तो वो चाहे की बार-बार उससे फिर मिले। हर किसी के दुःख को कम और खुशी को ज़्यादा करती थी। उसका स्वभाव माने ऐसा था की 'तेरे सारे दुःख मेरे, मेरे सारे सुख तेरे'।

यहाँ कोई और भी था, 'हमदा' मतलब 'एक खास'। था भी वह खास, उसके पास जैसे जादू था, खुशी का, पर वह खुश नहीं था। बाहर से देखने पर खुश पर अंदर से पुरा टूटा हुआ, दर्द से भरा। अपनी माँ की मौत का सदमा उसे छोड़कर जा नहीं रहा था। इसलिए अपने पास खुशी को देख नहीं पाता था, सिर्फ दर्द देख सकता था और अंदर पुरा गुस्सा। पाँच साल हो गये थे, उसे हँसे हुए, उसकी माँ को गए हुए और अपने पापा से बात किए हुए। उसका मानना था की उसके पापा की वजह से माँ उसके साथ नहीं है, उसकी पापा की

लापरवाही।

वह नूर से मिला, अवनी माँ के ज़रिए। वह भले ही अब अपनी माँ से बात नहीं कर पाता था पर उनकी पायल से करता था, बात जो उनसे उसे कहनी थी। वह उस पायल से अपनी जान से ज़्यादा प्यार करता था। और उस दिन उसका जन्मदिन नहीं उसके माँ की मौत का दिन था। पाँच साल से, हर साल इस रोज़ अपनी माँ से माँफी माँगता था। और आज भी जा रहा था, पर उसकी माँ की पायल ढूँढने के लिए, गुम गई थी उससे वह पायल। तभी नूर की आवाज़ सुनी, 'ये पायल किसकी है?' तभी हमदम की जान आई। वह उसे लेकर वहाँ से तुरंत चला गया। नूर ने सोचा की 'कौन है वह?

नूर को क्या लगा ये उसे भी नहीं पता, उसने हमदम के बारे में पूछना शुरू किया। ना उसे नाम पता था ना पता, एक ही कॉलेज में थे, थोड़ी दिक्कत तो हुई पर पता लगा लिया।

उसकी हालत के बारे में सुनकर नुर को ऐसा लगा की उसे एक दोस्त की ज़रूरत है। और नुर वह दोस्त बनने केलिए तैयार हो गई। पर हमदम, वह दुःख बाँटने में नहीं मानता था। पहले तो बहुत दिक्कत हुई, उसके पीछे जाने पर उसका गुस्सा सहना पड़ा, पर यह रास्ता उसका था। वह उसे छोड़ने केलिए तैयार नहीं थी। पर समय के बीतते-बीतते नुर कामियाब हो गई, दोस्त बन गई। और फिर समय के गति के साथ, नुर के साथ वह बदलने लगा। पाँच साल में पहली बार वह हँसा। अपने पिता से बात की और धीरे-धीरे अपनी माँ की मौत के सदमे से बाहर निकला। पर नाजाने धीरे-धीरे वह नुर के प्यार में गिर रहा था। वह तब बहुत अच्छा दोस्त थे, पर हमदम कुछ लालची हो गया। वह नुर को अपना बनाना चाहता था। वह उसके साथ अपनी पूरी ज़िंदगी बिताना चाहता था। नुर और उसे मिले हुए एक साल हो गया, हमदम का इक्कीसवा जन्मदिन आ गया। इस जन्मदिन पर वह नुर से तोहफा नहीं चाहता था बल्कि नुर को

तोहफा देना चाहता था। उसने अपनी ज़िंदगी का हिस्सा बनाकर। वह पूछना चाहता था की :-

"नूर, जब तक मैं तुम्हारे साथ हूँ हँसता हूँ और मैं अपनी पूरी ज़िंदगी हँसना चाहता हूँ। क्या तुम हमेशा केलिए मेरे साथ रहने केलिए तैयार हो?"

पर 'ना' सुनने की हिम्मत नहीं हुई और चला गया।

पाँच साल गुज़र गये,

अब वह खुशी बाटता था। हमदम अब असल में हमदम बन गया था पर खुशी बाटते हुए भी नूर से दूर रहने का दुःख उसके दिल में था। वह नूर से मिलना चाहता था और कॉलेज रीयुणियम आ गया।

वहाँ जाकर उसकी आँखें नूर को तालाश रही थी। उसे नूर मिलि पर अब वह नूर नहीं अंधेरा थी। और पलभर में गायब हो गई। नूर की दोस्त से पूछा तो उसने पूछा 'तुम कहाँ थे?'

ज़रूरत के समय पर ही दोस्त नहीं थे...।

फिर जो सुना, उसे सुनकर वह टूट गया।
वह बोली :- "तुम अचानक चली गई, तो तुम्हे ढूँढते तुम्हारे पीछे-पीछे आ गई। बहुत दूर ढूँढने पर भी तुम नहीं मिले। पर, पर.... वो करीब 5 लोग थे, उन्होंने नूर को".... । वह रोने लगी...। फिर कहने लगी :" उसके दो दिन बाद होश आया। तब तक बहुत कुछ हो गया था। नूर ने थाने में कंप्लेंट भी की पर उसका जवाब उन लोगों ने उसके चेहरे पर तेहज़ब डाल कर दिया"।

अब हमदम को लगा की यह सब उसकी गलती है। वह सब ठीक तो नहीं कर सकता था मगर नूर को इनसाफ दिलना चाहता था। उसने फिर उनके खिलाफ सुबूत इकट्टे किए। अब सब कोर्ट के उपर था। कटहरे में नूर थी, उसे देखकर भी किसी को कोई फर्क नहीं पड़ा। वो उनके सामने रोई गिड़गिड़ाई की उन दरिंदों ने उसके साथ क्या किया, पर कोई फर्क नहीं पड़ा।

कोर्ट ने उनको बेगुनाह कहकर छोड़ दिया। नूर अब तबाह हो गई थी। पर वह, उसने हार नहीं मानी। इसी कोर्ट के सामने उनपर तेज़ाब नूर ने डाला, और पूछा :

"क्या तुम ही किसी पर तेज़ाब डाल सकते हो? क्या तुम ही ज़ुल्म कर सकते हो? क्या तुम ही रात में बाहर घूम सकते हो? क्या तुम ही हँस सकते हो? क्या हम इनसान नहीं? मैं कब तक हँस सकूँगी? मैं कब तक इज़्ज़त से यहाँ रह सकूँगी? मैं कब तक जी सकूँगी? मैं कब तक हँस सकूँगी?"

नूर को कोर्ट के सामने उनपर तेज़ाब डालने की ज़जा हुई पर उसके इस प्रश्न ने दुनिया भर की लड़कियों को हिम्मत दी। अब वह जेल से निकल गई, और हमदम उसके लिए जवाब के साथ इंतज़ार कर रहा था की :-

"तुम ज़िंदगी भर हँस सकती हो, यह तुम्हारा हक है और तुमसे यह हक कोई छीन सकता नहीं।"